मधुबन ओमु शान्ति अंक 339 अक्टूबर 2020

पत्र-पुष्प

"स्व-उन्नति तथा विश्व सेवा प्रति विशेष प्रेरणायें"

(25-9-20)

परमपवित्र, सदा होलीएस्ट प्राण अव्यक्त-बापदादा के अति स्नेही, स्मृति और विस्मृति के खेल को समाप्त कर सदा स्मृति स्वरूप रहने वाले, निरन्तर योगी, निरन्तर सेवाधारी सभी निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व होली और हैपी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सभी होलीहंस सदा बाप समान होली (पवित्र) बन पूरे विश्व को होली बनाने की सेवा पर तत्पर हो ही। बापदादा अपने स्नेही बच्चों को सदा समान भव का वरदान देते हैं। अभी तो हम सबको अखण्ड महादानी बन, नि:स्वार्थ भाव से अपने सर्व खजाने विश्व सेवा में सफल करने का समय है। अब रहमदिल बन भटकती हुई अशान्त आत्माओं को शान्ति और शक्ति का दान देना है। यह समय विशेष ऐसी मन्सा सेवा का है। तो अपनी शक्तिशाली शुभ वृत्ति द्वारा सर्व आत्माओं को स्व-स्वरूप की स्मृति दिलाते हुए इस कलियुगी तमोगुणी वायुमण्डल को परिवर्तन करना है।

बोलो, हमारे मीठे मीठे भाई बहिनें सभी ऐसा ही लक्ष्य रख विशेष योग तपस्या कर रहे हो ना! बापदादा की मुरलियां सुनते उसकी गहराई में जाते, गहन मनन चिंतन द्वारा स्वयं को शक्तिशाली बनाए अन्य कमजोर आत्माओं को भी मदद करनी है, इसके लिए अब हर एक बाबा के बच्चे को

1) मन की एकाग्रता पर विशेष अटेन्शन देना है। मन को आर्डर से चलाना है। मालिक बन भिन्न-भिन्न श्रेष्ठ स्थितियों की सीट पर सेट रहना है। संकल्प रूपी फाउण्डेशन को ऐसा मजबूत बनाना है जो सेकण्ड में अशरीरी बन अव्यक्ति वतन का अनुभव कर सकें।

2) सेकेण्ड बाई सेकेण्ड ड्रामा की पटरी पर चलते हुए सदा एकरस स्थिति में रहना है। ड्रामा जिस रीति से, जैसे चल रहा है उसी के साथ-साथ मन की स्थिति भी चलती रहे, जरा भी हिले नहीं। संकल्प शक्ति को ब्रेक लगाने और मोड़ने की पॉवर जमा करनी है।

3) अब मन में उठने वाले व्यर्थ संकल्पों, विकल्पों को भी अर्पित कर अशरीरी बनने का अभ्यास करना है। अन्दर में कोई भी विकर्मों का, भाव स्वभाव व पुराने संस्कारों का किचरा न हो। ऐसा स्वच्छ-साफ बनना है।

4) अब समय प्रमाण संकल्पों को समेटने की शक्ति धारण करनी है। संकल्पों के विस्तार का बिस्तर बन्द कर हर एक के मन के भावों को जान उन्हें सन्तुष्ट करना है। हर एक को अभी यह अन्तिम कोर्स पढ़ना है।

तो अब ऐसा ही अटेन्शन रख हर सेकण्ड, हर श्वांस को सफल करना है। समय के साथ-साथ पुरुषार्थ में भी तीव्रता लानी है। अचानक के पेपर में पास होने के लिए सदा एवररेडी रहना है। अपनी एकरस, एकव्रता स्थिति बनानी है। बाकी अभी तक अन्य सभी सेवायें तो ड्रामा अनुसार बन्द हैं ही। सिर्फ देश विदेश में सब तरफ योग तपस्या के कार्यक्रम तथा ऑनलाइन कान्फ्रेन्सेज़ व कोर्सेज-क्लासेज आदि की सेवायें चलती रहती हैं। बाबा के सच्चे पक्के योगी बच्चे,अपनी खुशनुमा स्थिति से खुशी के, निश्चिंत स्थिति के वायब्रेशन फैलाते विश्व कल्याण की सेवा करते रहते हैं। अच्छा!

आप सभी का स्वास्थ्य ठीक होगा। सभी को बहुत-बहुत स्नेह याद स्वीकार हो।

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

“विस्मृति और स्मृति के खेल को खत्म कर अब स्मृति स्वरूप बनो”

1) अभी तक कई बच्चे स्मृति-विस्मृति की चढ़ाई उतरते और चढ़ते रहते हैं। सदा स्मृति स्वरूप बनने के लिए सदैव याद रखो कि सर्वशक्तिमान के साथ हमारे सर्व सम्बन्ध हैं। हम सभी से श्रेष्ठ सूर्यवंशी हैं। सदा अपना बाप और अपना वंश स्मृति में रखेंगे तो माया कुछ भी नहीं कर सकेगी।

2) हर समय एक दो को बाप की स्मृति दिलाने से आप स्मृति स्वरूप बन जायेंगे। यही स्मृति एकमत भी बना देगी। पाँच पाण्डवों की एकमत गाई हुई है। हरेक की अपनी-अपनी विशेषता भी है और एक दो में मिलजुल कर हर कार्य को सफल बनाने की भी विशेषता है।

3) माया अभी सदा के लिए विदाई लेने आती है, हार खिलाने नहीं। अगर माया को देख घबरा गये तो माया वार कर देगी इसलिए सदा यह स्मृति में रहे कि मैं सर्वशक्तिमान बाप का बच्चा हूँ, यह नशा कभी भूलना नहीं। भूलने से ही माया वार करती है।

4) स्मृति स्वरूप बनने के लिए त्रिमूर्ति का जो चित्र है, यह सदैव अपने सामने रखो इसमें बापदादा और वर्सा याद आ जाता है, इससे और सब रास्ते बंद हो जायेंगे। जैसे बैज लगाते हो ऐसे अभी बुद्धि में स्मृति स्वरूप बनो। इस एक चित्र की स्मृति से और सब स्मृतियां सहज आ जाती हैं।

5) अभी तक सुना तो बहुत है। सुनना अर्थात् मानना और चलना अर्थात् स्वरूप बनना। तो ज्ञानी हो लेकिन ज्ञान स्वरूप बनकर रहो। योगी हो लेकिन योगयुक्त, युक्तियुक्त बनकर चलो। तपस्वी कुमार हो लेकिन त्याग-मूर्त्त भी बनो। ब्रह्माकुमार हो लेकिन ब्रह्माकुमार वा ब्राह्मणों के कुल की मर्यादाओं को जानकर मर्यादा पुरुषोत्तम बनो।

6) मैं मास्टर विश्व-निर्माता हूँ – यह स्मृति स्वरूप में रहे तो निर्मानता का गुण सहज आ जायेगा और जहाँ निर्मानता अर्थात् सरलता नेचुरल रूप में रहेगी वहाँ अन्य गुण भी सहज ही आ जायेंगे। फिर कोई भी छोटी-छोटी बातें बच्चों के खेल समान अनुभव होंगी। जैसे बच्चे बचपन के अलबेलेपन के कारण कुछ भी करते हैं तो बुजुर्ग लोग समझते हैं कि यह निर्दोष, अनजान छोटे बच्चे हैं, कोई असर नहीं होता। ऐसे ही जब अपने को मास्टर विश्व-निर्माता समझेंगे तो यह माया के छोटे-छोटे विघ्न बच्चों के खेल समान लगेंगे।

7) संगमयुगी ब्राह्मणों की विशेषता सदा स्मृति स्वरूप की है। शूद्रपन अर्थात् विस्मृत स्वरूप। विस्मृति लौकिकता है अर्थात् वह इस लोक की रीति-रसम है, ब्राह्मणों की रसम सदा अलौकिक और स्मृति स्वरूप की है। सर्व दिव्य गुण ब्राह्मणों का स्वभाव है। विश्व सेवाधारी बनना, यह ब्राह्मण जीवन का संस्कार है। ऐसे सेवाधारी मैं पन का त्याग कर निरन्तर तपस्वी व स्मृति स्वरूप बन जाते हैं।

8) बाप ने अधिकार दिया है अपने आपका मालिक बनो लेकिन मालिक अर्थात् रचयिता बनने के बजाय स्वयं को रचना अर्थात् देह समझ लेते हो इसलिए माया रचयिता के ऊपर रचयिता बन अपना अधिकार रखती है। जब माया के आगे रचना बन जाते हो तब अधीन बनते हो। तो अधिकारीपन के स्मृति स्वरूप बनो।

9) जैसे भविष्य में जैसा समय होगा वैसी ड्रेस चेन्ज करेंगे। हर समय के कार्य की ड्रेस और श्रृंगार अपना अपना होगा। वहाँ स्थूल ड्रेस चेंज करेंगे और यहाँ जैसा समय, जैसा कार्य, वैसा स्मृति स्वरूप। मानो अमृतवेले का समय विशेष बच्चों के प्रति सर्वशक्तियों के वरदान का, सर्व अनुभवों के वरदान का, बाप समान शक्तिशाली लाईट हाऊस, माइट हाऊस स्वरूप में स्थित होने का, मेहनत कम और प्राप्ति अधिक होने का गोल्डन समय है। उस समय मास्टर बीजरूप वरदानी स्वरूप की स्मृति रहे। तो जैसा समय, वैसा स्मृति स्वरूप रहने से समर्थी स्वरूप बन जायेंगे।

10) समय प्रमाण अभी रीयल्टी और रॉयल्टी के अभ्यासी बनो। ‘जो हो, जैसे हो, जिसके हो’ उस स्मृति में रहो। पहले मनन करो कि हर समय वैसा स्वरूप रहा? कर्म करने के पहले स्मृति स्वरूप को चेक करो, कर्म करने के बाद नहीं करो। हर काम करने के पहले स्थिति में स्थित होने की तैयारी करो।

11) समय के प्रमाण स्मृति स्वरूप बनने की प्रैक्टिस करके प्रैक्टिकल उसकी अनुभूति करो। सर्व सम्बन्धों का रस एक बाप से लेने वाले नष्टोमोहा बनो। सर्व सम्बन्ध से एक बाप दूसरा न कोई, यह स्मृति सदा निर्मोही बना देगी। जब किसी तरफ लगाव अर्थात् झुकाव नहीं तो माया से हार हो नहीं सकती। ऐसे नष्टोमोहा बनना अर्थात् सदा स्मृति स्वरूप बनना।

12) अमृतवेले यह स्मृति में लाओ कि सर्व सम्बन्धों का सुख हर रोज़ बाप दादा से लेकर औरों को भी दान देंगे। हर सम्बन्ध का सुख लो। सर्व सुखों के अधिकारी बन औरों को भी बनाओ। ऐसे अधिकारी समझने वाले सदा बाप को अपना साथी बनाकर चलते हैं। जो भी काम हो तो पहले साकार साथी याद न आये,

पहले बाप याद आये। सच्चा मित्र भी तो बाप है ना। ऐसे सच्चे साथी का साथ लो तो सहज ही सर्व से न्यारे और प्यारे बन जायेंगे।

13) मोह का बीज है सम्बन्ध। जब बीज को ही कट कर दिया तो बिना बीज के वृक्ष कैसे पैदा होगा। अगर अभी तक होता है तो सिद्ध है कि कुछ तोड़ा है, कुछ जोड़ा है, दो तरफ है। उन्हें मंजिल नहीं मिल सकती। शिकायत नहीं करो कि क्या करें बन्धन है, कटता नहीं... जहाँ मोह नष्ट हो गया तो स्मृति स्वरूप स्वतः हो जायेंगे फिर कटता नहीं, मिटता नहीं, यह भाषा खत्म हो सर्व प्राप्ति स्वरूप हो जायेंगे।

14) वर्तमान समय के प्रमाण आप बेहद के वानप्रस्थी सदा एक के अन्त में अर्थात् निरन्तर एकान्त में सदा स्मृति स्वरूप रहो। तीन स्मृतियाँ हैं – एक स्वयं की स्मृति, दूसरी बाप की स्मृति और तीसरी ड्रामा के नॉलेज की स्मृति। इन विशेष तीन स्मृतियों में सारे ही ज्ञान का विस्तार समाया हुआ है। इन तीन स्मृतियों को धारण करने से 'स्मृति भव' के वरदानी बन, मायाजीत जगतजीत बन जायेंगे।

15) सिर्फ पुरुषार्थी कहना अर्थात् अलबेला बनना इसलिए अपने प्रारब्धी स्वरूप को सदा सामने रखो। प्रारब्ध देखकर सहज ही चढ़ती कला का अनुभव करेंगे। संगमयुग की विशेषताओं के सदा स्मृति स्वरूप बनो तो विशेष आत्मा हो ही जायेंगे। ''पाना था सो पा लिया'', सदा यह गीत गाते रहो।

16) सदा स्मृति के इस स्वीच को ऑन करो कि तू मेरा है। सोचा नहीं था कि ऐसा भाग्य भी मिल सकता है, लेकिन भाग्य विधाता बाप ने भाग्य का वरदान दे दिया। वह मेरा बन गया, इसी सेकेण्ड के वरदान ने जन्म-जन्मान्तर के वर्से का अधिकारी बना दिया, इस वरदान को स्मृति स्वरूप में लाना अर्थात् वरदानी बनना। जो सदा इस वरदान के स्मृति स्वरूप रहते हैं उनकी माला सदा सिमरी जाती है।

17) ऐसे नहीं समझो कि मैं तो हूँ ही बाबा का, लेकिन बार-बार स्मृति स्वरूप बनो। अगर हैं ही बाबा के तो स्मृति स्वरूप होना चाहिए, वह खुशी होनी चाहिए। सिर्फ हैं ही के अलबेलेपन में नहीं लेकिन हर सेकण्ड स्वयं को भरपूर समर्थ अनुभव करो, इसको कहा जाता है स्मृति स्वरूप सो समर्थ स्वरूप।

18) ''योगी भव और पवित्र भव'', यह दोनों विशेष वरदान सदा जीवन में अनुभव करो। इस योगी भव के वरदान से सदा शक्ति स्वरूप और पवित्र भव के वरदान से पवित्र, पूज्य स्वरूप दोनों ही बन गये। फिर कोई भी विकार आ नहीं सकता।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"अन्तिम परिस्थितियों का सामना करने के लिए मन्सा को शक्तिशाली बनाओ"

(दादी गुल्जार 21-07-02)

बाबा ने हम सबको यह पाठ पक्का कराया है कि ''हमें समस्या स्वरूप नहीं, समाधान स्वरूप बनना है।'' कारण नहीं सुनाना है लेकिन निवारण स्वरूप बनना है। समस्या चाहे हमारे तरफ से हो या दूसरे की तरफ से, कभी-कभी गलतफ़हमी भी हो जाती है, लेकिन सबका ज्ञान हम सबको मिल चुका है। तो अगर हम लक्ष्य रखेंगे कि मुझे समाधान स्वरूप बनना ही है तो समस्या को समाधान करने में लग जायेंगे। नहीं तो समस्या ही बुद्धि में चलती रहेगी, यह हुआ वह हुआ, ऐसा नहीं, वैसा... बहुत होता है। इसके लिये बाबा ने जो हमें मन्त्र दिया है उसको हम पक्का रखेंगे।

अभी तो हमारा सारा ज्ञान मन के ऊपर विजय प्राप्त करने का है और फाउण्डेशन भी मन है, पहले संकल्प आता है, उसके बाद वाचा और कर्मणा भी होती है। वास्तव में देखा जाए तो हमें पुरुषार्थ वा किसी भी बात में मेहनत करने की जरुरत नहीं है। पहले मन्सा है फिर वाचा है फिर कर्मणा है। अगर आप मन्सा को ही ठीक कर दो तो वाचा कर्मणा की मेहनत से बच जायेंगे। यही शार्टकट पुरुषार्थ है। तो वर्तमान समय मन के ऊपर बहुत अटेन्शन चाहिए। योग भी हमारा मन द्वारा ही है, फिर सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हैं तो पहले कोई भी बात वृत्ति में आती है फिर वृत्ति से दृष्टि में आती है। फिर दृष्टि से कृति, सम्बन्ध-सम्पर्क में आती है। तो हमारा मन्सा के ऊपर बहुत अटेन्शन चाहिए। और लास्ट घड़ी पेपर भी ज्यादा टाइम का नहीं होगा, एक सेकण्ड का पेपर होना है और वह होना है नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप का। बाबा ने यह पेपर भी आउट कर दिया है और समय भी आउट कर

दिया है। तो एक सेकण्ड का पेपर होना है और संकल्प अगर हिलता है, मानो मेरे मन में अच्छे के बजाए उल्टा संकल्प आया तो सेकण्ड ही लगता है। अगर अन्त समय में मन के ऊपर हमारा अटेन्शन अथवा कन्ट्रोल नहीं है तो उस समय कुछ भी हो सकता है।

तो अन्त के समय आपके पास 4 प्रकार के पेपर आने हैं। 1- माया द्वारा 2- प्रकृति द्वारा 3- लगाव द्वारा 4- अशुद्ध आत्मायें भी अन्त में वार कर सकती हैं लेकिन अगर हम योगयुक्त हैं तो कोई भी पेपर में हम सहज पास हो सकेंगे। इसलिए बाबा मन्सा सेवा का अभ्यास करा रहा है क्योंकि अन्त समय में अकाले मृत्यु के कारण सभी के तमोगुणी संस्कार इमर्ज होंगे तो उस समय अगर मानों वह हमारे ऊपर वार करता है और हमें मन्सा सेवा का अभ्यास है, तो आत्माओं को शक्ति देने की सेवा में बिजी हो जायेंगे फिर कोई भी अशुद्ध आत्मा हमारे ऊपर वार नहीं कर सकती है। उस समय खिंचातान होगी इसलिए अभ्यास अब से चाहिए। उस समय बाबा-बाबा कहने से क्या होगा, बाबा सुनेगा ही नहीं क्योंकि फिर बाबा कहेगा मतलब से मुझे याद करते हो तो दो पेपर। प्यार से तो याद किया ही नहीं, मतलब से याद किया। तो मन्सा सेवा की जो बाबा ने विधि बताई है उसे बहुत अटेन्शन में रखना चाहिए।

मन को बिजी रखने की विधि हरेक अपनी-अपनी दिनचर्या के हिसाब से बनाओ। सारे दिन में मुझे मन्सा सेवा का अभ्यास जरुर करना है। अन्त समय में प्रकृति की हलचल भी बहुत बढ़ेगी। पांचों तत्व सब इकट्ठे काम करेंगे, आप सोचो उस समय क्या हालत होगी! तो कितनी शक्ति चाहिए। अगर हमारा बहुत समय से साधारण पुरुषार्थ है तो हम विजयी बनने में नम्बर आगे नहीं ले सकेंगे। तो हमको यह पुरुषार्थ करना है कि हम अन्त में विजयी कैसे बनें? इसके लिए एक तो हम मन को बिजी रखने के अभ्यासी बनें। बीच-बीच में इसका अभ्यास करते रहें तभी तो बहुत समय का अभ्यास हो जायेगा। मन को जब चाहो, जैसे चाहो, जिस रफ्तार में चलाना चाहो, वहाँ मेरा मन जा सके, इसको कहते हैं मन को कन्ट्रोल करने की पॉवर। यही अभ्यास अन्त के समय काम आयेगा।

तो मन को बार-बार बाबा की तरफ, एक ही तरफ लगाते रहें, यहाँ वहाँ चंचल नहीं हो, इसके लिए योग भट्ठियों का होना भी जरुरी है। बाकी समस्यायें तो सब जगह पर आयेंगी, अगर समस्यायें सब समाप्त हो जायें फिर हम ठीक हो जायें, यह तो होना नहीं है। समस्यायें और ही बढ़ेंगी, माया, प्रकृति सब अन्त में अपना दांव लगायेंगे। व्यक्ति, वैभव भी अपने तरफ खीचेंगे, जिसका हिसाब-किताब रहा हुआ होगा वह अपने तरफ खींचेगा। यह सब कुछ होगा। लेकिन कोई भी सूक्ष्म में अंश का वंश बन सकता है। हर विकार का अंश है, काम का अंश कामनायें भी हैं तो अंश का वंश पैदा हो जाता है। तो एक-एक विकार की चेकिंग करो। मोटी-मोटी चेकिंग नहीं, मुझे तो क्रोध नहीं आता है लेकिन कोई बात ऐसी होती है तो आवेश में आ जाते हैं। फिर चिड़चिड़ापन आता है। जब भी थकावट होती है या ऐसी कोई बात होती है तो चिड़चिड़ापन आता है, यह भी अंश तो है ना। इसीलिए चेक करो कि कोई भी विकार का अंश हमारे पास रहा हुआ तो नहीं है? विजयी तब बनेंगे जब हमारा मन के ऊपर कन्ट्रोल हो। मन को बिजी रखने की आदत बहुत चाहिए।

कई बार अपना ही संशय विघ्न रूप बनकर आता है। ज्ञान की विधि में जरा भी संशय आया तो भूत प्रेत की बातें याद आयेंगी। यह भी हमारे मन्सा शक्ति की कमजोरी है। अगर मेरी मन्सा शक्ति पॉवरफुल है, तो कभी कोई कमजोर संकल्प अथवा अपने में संशय नहीं आना चाहिए। संशयबुद्धि विजयी हो ही नहीं सकता। निश्चय बुद्धि ही विजयी होगा। तो अन्त के समय यह सभी बातें होंगी। हमारे ही जो विकार कमजोरियाँ हैं, वह जिन्न भूत के रूप में हमारे सामने आयेंगे। जिसकी जैसी गलती होगी, उसको वैसी सजा मिलेगी। जिस समय भय होता है उस समय हाय हाय करते हुए कहेंगे इतनी गलतियां मैंने की हैं, यह भी किया, यह भी किया... तो भयभीत तो होंगे ना, वही भूत हैं। भय का भूत सबसे बड़ा है। और भूत तो हट सकते हैं, भय का भूत नहीं हटता है। इसीलिये अगर अन्तिम समय की तैयारी करनी है तो शार्ट में मैं तो यही कहूँगी कि अपने मन को शुद्ध तरफ बिज़ी रखने की दिनचर्या, टाइम-टेबुल हरेक अपना बनाये और उस पर पूरा चले। अब मन्सा सेवा का बहुत अभ्यास चाहिए। पांच मिनट भी मिलें तो यह अभ्यास करो। ऐसे नहीं समझो एक घण्टा मिले तब अभ्यास करूं, फिर सकाश दूँ, सेकेण्ड भी मिलता है तो मन्सा को एकाग्र करके सकाश देने की सेवा में लग जाना चाहिए। तो जब भी पांच मिनट मिलें, दस मिनट मिलें हमें इस बात पर अटेन्शन ज्यादा देना है। और यही अभ्यास हमको अन्त समय मदद देगा। तो हमारे में इतनी पॉवर होनी चाहिए, जिसको जो चाहिए उसको मेरे द्वारा सब कुछ प्राप्त हो जाये। लेकिन यह तभी होगा जब मेरे पास स्टॉक जमा होगा। इसके लिए दो शब्द याद रखो - स्टॉक और स्टॉप। बिन्दी लगाना माना स्टॉप। अगर स्टॉप करना नहीं आयेगा तो स्टॉक जमा हो ही नहीं सकता है इसीलिए यह अभ्यास बहुत-बहुत जरुरी है। अच्छा - ओम् शान्ति।

“बचत का खाता कैसे बढ़ायें”

(गुल्जार दादी जी 08-08-02)

बाबा ने विश्व-कल्याण के सेवा की जिम्मेवारी का ताज आप सबको दिया है। जब से ब्रह्माकुमारी बनी तब से मेरे ऊपर डायरेक्ट बाबा ने यह ताज रखा है, निमित्त टीचर बनाया है और हमारे ऊपर विश्व कल्याण करने का ताज पहनाया है। सभी के ऊपर यह ताज है? तो यह जो मौन भट्ठी है, इसमें जैसे आप सबकी ताजपोशी हो रही है।

मौन में मन्सा सेवा करेंगे तो आपका समय बच जायेगा। मौन रखने में कई फायदे हैं। शुरू में मौन भट्ठी के अन्तर्गत ही यह सूक्ष्मवतन का राज़ खुला था। तो मौन में रहने से जो टाइम बचेगा उसमें मन्सा सेवा करना। योग करना, इसी से सब बचत हो जायेगी। लोग तो स्थूल धन बचाते हैं, लेकिन हमारा मुख्य खज़ाना है - संकल्प शक्ति क्योंकि योग का आधार संकल्प शक्ति ही है। संकल्प शक्ति के आधार पर ही हमारा योग लग सकता है। और मन साफ होगा तो ज्ञान का मनन हो सकेगा। मन से ही तो मनन करेंगे ना। ज्ञान तो सुन लिया लेकिन जब तक उस ज्ञान को मनन नहीं करेंगे तब तक अपना नहीं बनेगा। बाबा ने जो ज्ञान का खज़ाना दिया है उस खजाने को मनन शक्ति से ही अपना बना सकते हैं। तो ज्ञान का बीज भी हमारा मनन शक्ति के आधार पर हो सकता है। समय भी हमारा सबसे बड़ा खजाना है। समय भी हमारा सफल किस आधार से हो सकता है, जब हमारा मन ठीक होगा और मन ठीक होगा तो बुद्धि भी ठीक करेंगे। तो सारा आधार हमारा संकल्प शक्ति पर है।

जब हम किसी के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखते हैं तो वह शुभ भावना मन में ही रखेंगे ना। तो योग, ज्ञान, धारणा, सम्बन्ध-सम्पर्क में आना, शुभ भावना रखना...इससे ईर्ष्या, हषद स्वत: खत्म हो जायेगी। तो चारों ही सबजेक्ट जो हमारी हैं उन सबका आधार है संकल्प शक्ति। तो इस शक्ति को पहले हमें बचाना है। संकल्प शक्ति बहुत बड़ी शक्ति है। जैसे अमृतवेले योग करने की श्रीमत बाबा ने दी है। उस समय सारे विश्व में सभी ब्राह्मण एक साथ योग करते हैं। तो उस समय का वायुमण्डल सहयोग का बहुत सुन्दर होता है। यह बाबा का बच्चों से मिलने का स्पेशल टाइम है इसलिये बाबा भी चक्कर लगाता है।

तो समय का भी महत्व होता है। समय भी हमारा बहुत बड़े ते बड़ा खजाना है। श्वांस भी खज़ाना है। कहते हैं ना श्वांस व्यर्थ नहीं गँवाओ। और जो यह दिमागी एनर्जी है, वह भी हमारा एक खज़ाना है। दिमाग की इस एनर्जी को भी अगर हम ऐसे ही गंवा देते हैं तो हमारे शरीर पर उसका असर आता है। जो ज्यादा बोलते हैं और जो ज्यादा दिमाग चलाते हैं उनका दिल और दिमाग कमजोर होता है क्योंकि वह एनर्जी गँवा देते हैं। इससे फिर योग भी नहीं लगेगा, मूड भी ऑफ कर बैठेंगे। तो दिमाग की एनर्जी भी हमारा खजाना है। वह हमको कभी नहीं गंवानी चाहिए। कईयों को योग का अनुभव कम है। भल कहते हैं हम योगी हैं। तो दिमाग की एनर्जी फालतू बातों में और छोटी सी बात को बड़ा करने में वेस्ट होती है। वह किसी बात से सन्तुष्ट नहीं होंगे क्योंकि दिमाग की एनर्जी कमजोर है इसलिये कोई बात दिमाग में आयेगी ही नहीं। तो कभी भी अपने दिमाग की एनर्जी वेस्ट नहीं करो। वेस्ट होती है व्यर्थ बातों से, छोटी सी बात बड़ी करने से। बड़ी को छोटा करना सीखो, छोटी बात को बड़ा नहीं करो। तो एनर्जी जमा होगी। अगर एनर्जी वेस्ट जाती है तो न ज्ञान बुद्धि में आयेगा, न मनन शक्ति होगी, न योग लगेगा, न ब्राह्मण जीवन का सुख पा सकेंगे। ब्राह्मण तो बन गये, पता नहीं मजबूरी से बनें या माँ बाप के कहने से... क्या भी हो लेकिन ब्राह्मण बने तो ब्राह्मण जीवन का सुख तो लो! लेकिन अगर दिमाग की एनर्जी वेस्ट हो रही है तो इसका सुख नहीं ले सकेंगे इसलिए इसकी बहुत सम्भाल रखना, जरा भी व्यर्थ बात बुद्धि में टच नहीं हो जाए।

संकल्प शक्ति, समय की शक्ति, श्वांस और दिमाग की एनर्जी यह सब खज़ाने हैं और बाकी शक्तियाँ, गुण तो हमारा सबसे बड़ा खज़ाना है ही। इन सभी खज़ानों की हमको बचत करनी है। शक्तियों की बचत तब हो जब शक्तियों को व्यर्थ नहीं गंवायें। बाबा ने हमको विकारों को जीतने की शक्ति दी है तो विकारों पर हम सख्त नज़र रखते हैं। अभी उसी शक्ति को हम लड़ने-झगड़ने में, क्रोध करके गंवा दें, तो शक्ति व्यर्थ गई ना! जो भी शक्ति है वह समय पर कार्य में लगे। जिस समय सहनशक्ति चाहिए, उस समय अगर वह शक्ति हमारे काम में नहीं आये और काम हो जाने के बाद अगर मगर करते क्या,

क्यों... कहते रहें तो क्या समझेंगे! आपने शक्ति को यूज़ करना नहीं सीखा। अगर यूज़ करना आता है तो समझो जमा के खाते में जमा हो रहा है। संगम पर जितना जमा करेंगे उतना 2500 वर्ष आपको उसके फल की प्राप्ति होगी। जैसे मानो किसका बैंक एकाउन्ट है ही नहीं और घर में कोई बीमारी हो गई तो क्या हालत होगी, उसे पैसे-पैसे के लिए रोना पड़ेगा इसलिये यह सारे खज़ाने चेक करो और सारे दिन में जमा करो फिर रात के टाइम अपना चार्ट लिखो।

जो दिलशिकस्त होते हैं वह कहेंगे क्या करें मेरी दिल छोटी है ना। जब दिल में दिलाराम बैठा है तो भी दिल छोटी! फिर रोना आयेगा, फिर डिससर्विस...। इसलिये दिलशिकस्त कभी नहीं बनो। अरे बाबा मेरा साथी है! साथ नहीं है लेकिन साथी है। साथी माना हर कार्य में मददगार है। तो जब शिवबाबा हमारा साथी है, इतना बढ़िया अच्छा साथी फिर सारे कल्प में मिलेगा क्या! भगवान हमारा साथी है फिर हम दिलशिकस्त कैसे हो सकते हैं? तो नोट करो सारे दिन में हमने कौनसा खज़ाना कितना जमा किया? और उसको बढ़ाते जाओ। अगर लाइफ है तो बाबा जो कहता है सुख के झूले में झूलो, आनन्द के, शान्ति के झूले में झूलो या बाबा के तख्त पर बैठो, वह कब अनुभव होगा? अगर ऐसे ही खज़ाने गंवाते रहेंगे, दिलशिकस्त होते रहेंगे तो हम मौज कब मनायेंगे! तो खज़ानों को बचाओ, व्यर्थ नहीं गँवाओ। तो बचत करना माना सभी खज़ानों को सही रीति से यूज़ करना। यूज़ करो या जमा करो, बचाओ। अब नहीं तो कब नहीं। सुल्टे के लिए कहा जाता है, अब नहीं तो कब नहीं और जो बुरा है, उसमें भले कल-कल करते रहो। अच्छे में अब नहीं तो कब नहीं तो इतना पुरुषार्थ हमारा है? बी.के. का स्टैम्प कोई छोटी बात नहीं समझो। अपना लक्ष्य याद रखो, मैं कौन? मेरी मर्यादा क्या है? उस मर्यादा के पट्टे पर अपने को चलाओ तो कोई मेहनत नहीं लगेगी। ब्रह्माकुमारी की मर्यादा जो है उस पर चलो, बस। बाबा ने सुबह से ले करके मर्यादायें एक एक फिक्स करके रखी हैं - उठो कैसे, बैठो कैसे, बोलो क्या, खाना कैसे बनाओ, खाना खाओ कैसे, सोओ कैसे? वह भी बाबा ने बताया है। एक एक कर्म की मर्यादा बाबा ने सिखाई है। बस उस पर चलो फिर मेहनत करने की क्या जरुरत है। इतना पुरुषार्थ करने की जरुरत ही नहीं है क्योंकि बाबा के बन गये हैं ना। और बाबा हमारा साथी है, यह नशा तो रखो। हर घड़ी बाबा मेरा साथी है। बाबा से गहरा सम्बन्ध रखो, अधिकार रखो। तो बाबा की मदद मिलती रहेगी, चार्ट में बचत का खाता बढ़ता रहेगा। चार्ट लिखने में बिजी रहेंगे तो और सब बातें आपेही खत्म हो जायेंगी, फिर मजा आयेगा, खुशी होगी, नाचते रहेंगे। अच्छा - ओम् शान्ति।

"शरीर से डिटैच रहने का अभ्यास करो तो खुशबू आयेगी बदबू निकल जायेगी"

(दादी जानकी जी 28-08-04)

हम डिटैच कैसे रह सकते हैं? जब कोई कर्मबन्धन न हो। याद में रहने से पाप कट गये तो डिटैच रहना आसान हो गया। वैसे शिवबाबा को जैसे भोलानाथ कहते हैं वैसे पापकटेश्वर कहते हैं, नीलकंठेश्वर यानि सुनाते-सुनाते उनका कंठ नील हो गया। कितने अच्छे-अच्छे नाम हैं सोमनाथ, अमरनाथ... ऐसे बाप के रूप को भी जानना है। परम आत्मा का जैसे रूप है वैसे अपना भी लाइट रूप हो। एक तो ऊपर रहने से लाइट हाउस बनेंगे। कोई इतनी लाइट किसको नहीं दिखा सकते हैं तो अच्छा है, चलते-चलते चलने वाले को तो लाइट दिखा सकते हैं, जैसे रोड की लाइट होती है। तो बाबा कहते हैं चलते-चलते भी किसकी सेवा कर सकते हो तो सेवा नेचुरल है, सेवा बड़ी बात नहीं है।

हर बात में सोचना नहीं होता है, बाबा की कितनी ऊंची ऊंची बातें हैं उसमें विचार करते हैं कितनी ऊंची हैं, कितनी काम लायक हैं? इसमें अगर विचार करते हैं तो वैल्यू का पता चलता है। यह दु:खधाम है लेकिन यहाँ अन्दर दुखधाम हो नहीं सकता है। कभी अपने अन्दर दु:ख हो गया तो दु:खधाम तो यहाँ अन्दर ही हो गया। मन के अन्दर दु:खधाम हो गया तो चेहरे से पता चला, अब यह दु:खधाम है। शान्तिधाम है तो बुद्धि ऊपर चली गई। सुखधाम है तो भविष्य में चली गई, तो यह सब विचार वाली बातें हैं ना। जो अच्छा पढ़ते हैं, उस स्टूडेन्ट को ही टीचर्स स्कॉलरशिप देते हैं क्योंकि उनका एक तो कैरेक्टर बहुत अच्छा होता है, दूसरा प्रेजेन्ट मार्क बड़ी अच्छी है, पढ़ता लिखता भी

अच्छा है। सबसे सम्बन्ध भी अच्छा है, ठीक समय पर आता जाता है, क्लास में होमवर्क करके आता है। तो ऐसे ऐसे जो बच्चे होते हैं, उसका ऐसा संस्कार-व्यवहार होता है उसने कभी भी कोई दर्जे में कम मार्क्स नहीं ली होगी।

दूसरा बाबा ने कहा तुम आर्मी हो, तो अटेन्शन और एलर्ट होकर चलो क्योंकि दूसरों को बचाने वाले हैं। फिर हम राजयोगी हैं तो हम जब योग करने बैठते हैं तो हमारी बैठक भी बाबा जैसी हो, बाबा खड़ा है तो भी याद में रहने की प्रैक्टिस कर रहा है। हमारी दीदी भी ध्यान खिंचवाती थी, कारोबार भले है पर काम पूरा हुआ तो डिटैच, बात पूरी हुई डिटैच। फिर उस बात का चिंतन न चले या पहले चिंतन न चले। किसी का मेरे प्रति किसी काम में चिंतन न चले। मेरे चिंतन के कारण उसकी याद में जो फ़र्क पड़ेगा उसका दोष मेरे ऊपर आयेगा ना। निरन्तर योग में रहना है तो यह ध्यान रहे कि मेरे कारण किसी का व्यर्थ चिंतन न चले। तो सूक्ष्म ऐसी बातें अगर सच्ची-सच्ची याद में रहने वाला चाहता है, मैं ऐसे याद में रहूँ तो अपने चिंतन को बड़ा स्वच्छ रखे। दूसरा मेरे कारण किसका चिंतन न चले। कोई ऐसा गलत काम न करुँ जिस कारण किसका चिंतन चला तो यह भी मेरी लापरवाही है, अगर उसका योग न लगा, उसको योग में रहने में मदद नहीं की तो मेरा योग कैसा लगेगा, तो इतना सुख दो लेकिन आवाज में नहीं आओ क्योंकि बिना आवाज के भी काम कर सकते हैं। याद में तो आवाज की जरुरत नहीं है। पर सेवा में भी आवाज में न आयें, किसके स्वभाव-संस्कार यह वह... इस झंझट में न जायें, तो ऐसा योगी मिसाल बनें।

जो बाबा कहता है घड़ी-घड़ी डिटैच हो करके याद में रहने का जिसको रस बैठा, उनसे हर कार्य सहज होते रहते हैं। उसको कोई कार्य कठिन लगेगा नहीं। तो हर बात में एक्यूरेट हो यानि सच्चाई, सफाई और स्पष्ट हो। ऐसा मिसाल बनने से लाइट हाउस बनते हैं। लाइट हाउस कुछ कहता नहीं है, एक ऑख में शान्तिधाम, दूसरी आँख में सुखधाम नीचे है दु:खधाम। ऐसे लाइट हाउस न किसको दु:ख देता है, न लेता है। ऐसे जो उपराम रहने वाले हैं जिसको बाबा रमता योगी कहते हैं वो सदा सुख को पाता है। ऐसे अपनी अवस्था जमाने का जिसको शौक है उसके लिये सेवा क्या बड़ी बात है। ऐसे नहीं सेवा है, सेवा भले करो ना। सेवा क्या बड़ी बात है सिर्फ आवाज में नहीं आओ तो सेवा अच्छी बात है। आवाज में सेवा कम होती है। आवाज नहीं करो तो सेवा अच्छी होती है। कर्मेन्द्रियाँ अपनी है जितनी सेवा करो उतनी आपेही पावन बन जायें। जिन कर्मेन्द्रियों ने कभी उल्टा किया तो नहीं, पर पूर्वजन्म में कोई किया हुआ हो वो भी हड्डियां सारी पावन बन जायें तो उसमें हड्डी सेवा करना बहुत अच्छा है, इसमें कोई थकने की बात ही नहीं है। तो कर्मेन्द्रियों से कर्म करना माना ही है कर्मेन्द्रियों को शान्त बनाना।

आत्मा शरीर से निकल जाती है तो बांस आ जाती है और हमारी आत्मा शरीर से डिटैच हो जाती है तो खुशबू हो जाती है। इसलिये बाबा कहते हैं बच्चे अंग-अंग में सुगधं। तो जितना योगी बनते हैं उतना सुगधं आती है। जितना योगी रहो उतनी स्वत: ही वो जो खुशबू है, बड़ी नेचुरल बहुत अच्छी बाबा के याद की जो खुशबू हैं ना वो दूर-दूर तक जाती है। अच्छा महसूस होता है, बदबू से थोड़ा डर लगता है। किसी के अन्दर अच्छी बातें नहीं होती हैं तो उनसे ठीक फील नहीं होता है, बदबू आती है। इसलिये बाबा कहते हैं डिटैच रहो, तो बांस निकल जायेगी और खुशबू आने लगेगी। डिटैच रहने से याद रहेगी, याद रहने से खुशबू आयेगी, खुशबू आने से कर्मेन्द्रियों से कर्म करते हुए भी किसके साथ भी भाव-स्वभाव, मैं तू, तू मैं, तेरा मेरा... इस झंझट से परे रहने वाला डिटैच रह सकता है। एक डिटैच रहेगा, दूसरा उपराम रहेगा तो लाइट हाउस रहेगा। जो डिटैच नहीं रह सकता है वो लाइट हाउस नहीं बन सकता है। तो डिटैच रहना माना जो बात हो गई फिनिश। पूरा हुआ फिर ऊपर जाना है।

नईया थोड़ी हिलती है लेकिन मांजी (खिवैया) अच्छा होता है तो हम न हिलते हैं, न डोलायमान होते हैं क्योंकि सच की नईया में बैठे हैं। दूसरा खिवैया (खुद खुदा) चला रहा है, जब ऊपर जा रहे हैं तो क्या करें? ब्रेक को पॉवरफुल बना लेना चाहिए। कार की बात अलग है लेकिन प्लेन जा रहा है तो कितना अटेन्शन होता है पॉयलेट का, क्योंकि रिस्क है। तो हम भी इतना अटेन्शन रखें जरा भी ऊपर से नीचे गिरे माना व्यर्थ चिंतन में आये या कोई विकल्प में आये, विकर्म हुआ तो धड़ाम करके गिरेंगे। वो गिरना वा डूबना अलग है, डूबने वाले को इतना दु:ख नहीं होता है पर गिरने वाले को बहुत दु:ख होता है। अच्छा, चलो डूब गया लेकिन वो तो ऊपर से गिरा तो उसकी क्या गति होती है, वो आप जान सकते हो। तो ऊपर जा रहे हैं इसलिये उपराम वृत्ति चाहिए। यहाँ बैठे डिटैच रहने से आत्मा समझेंगे, शरीर से न्यारे समझेंगे पर आत्मा समझके, शरीर से न्यारा समझके बाबा को याद करते अगर कोई विकर्म हुआ, पहले विकल्प हुआ फिर विकर्म हुआ तो गिर पड़ेंगे फिर उसकी गति क्या होगी? वो गति देखी नहीं जाती, सोची भी नहीं जाती। बिचारे किसी का भी यह हाल न हो इसलिये अन्दर से ऐसे हम आर्मी रहें, एक दो को मदद करें गुप्त बचाने की। न कि लापरवाह हो करके गिरे तो गिरे हमको क्या पड़ी है, हरेक का कर्म का हिसाब-किताब है, ऐसे कभी

केयरलेस की भाषा न हो। तो रूहानी भाषा, ईश्वरीय स्नेह वाली भाषा किसी को सुखों से सेलवेशन देने वाली, बचाने वाली भाषा हो। तो हमारी भावना अनुसार भाषा होती है। भावना हमारी बहुत अच्छी श्रेष्ठ कोई कामना वाली नहीं हो तो भाषा में मधुरता होगी।

दिल, मन, बुद्धि, विवेक, चित्त फिर वृत्ति इन सबको मिला करके पंचायत में, सत्यता की शक्ति से फैंसला करो। दिल मन इकट्ठे बैठेंगे तो कुछ आगे बढ़ेंगे। विवेक भी हाँ हाँ करेगा फिर उनसे बन जायेगी वृत्ति और दृष्टि, फिर बनेगी नई सृष्टि। सबको मिला करके बैठ करके फैंसला करो, जल्दी-जल्दी में नहीं करो। उतावली से करने में कोई उल्टा जवाब निकल आयेगा इसलिये शान्ति और धीरज से फैंसला कर लो। योग माना क्या है, डिटैच माना क्या है? और सब बातों से फ्री हो करके फिर यह काम करो तो उसमें बैटरी चार्ज हो जाती है। पहले पवित्रता फिर सत्यता, फिर नम्रता, फिर गम्भीरता फिर मधुरता कैसे आई? पंचायत को बिठाया तो यह सब अच्छी तरह से काम करने लगे। यहाँ ऐसी अपनी कारोबार चलायेंगे तो सतयुग में स्वत: ही यह कारोबार आपेही चलेगी। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

समर्पित माना बेगमपुर के बादशाह - (दादी जी का पर्सनल अनुभव)

कई लोग मेरे से यह सवाल पूछते हैं कि दादी आपको कोई फ़िकर होता है? क्योंकि जानते तो हैं कि आखिर इतने बड़े कार्य-व्यवहार की कई बातें होती हैं। रोज़ की अनेक बातें हर मिनट में आती जाती हैं। कई बार तो एक में दूसरी, दूसरी में तीसरी बात आती तो फ़िकर तो रहना चाहिए ना! परन्तु बाबा का मुझे यह सचमुच पर्सनल वरदान है कि हमें न कोई भी फ़िकर होता, न कोई चिन्ता होती, न कोई चिन्तन चलता – इसका कारण है कि हम निमित्त हैं। फ़िकरात करने वाला करे, मैं क्यों करूँ? मेरी कोई रचना है क्या जो मैं फिकर करूँ! तेरी रचना है तू उनका फ़िकर करो, मुझे आप कहते हो कि यह कार्य करो तो मैं करती हूँ। तू कराने वाला है, हम निमित्त हैं। अच्छा है तो भी आप बैठे हो, रांग हुआ तो भी आप जवाबदार हो? तो फ़िकरात किसकी? कोई बात है प्लान करो, राय करो – कैसे करें, क्या करें लेकिन चिन्ता किस चीज़ की! चिन्ता चिता के बराबर है। हम कभी चिन्ता करते नहीं। आप लोगों ने कभी देखा है? फिकर से फारिग कींदा स्वामी सद्‌गुरु। तो फ़िकर वह करे, हम क्यों करें।

2- आप सभी बापदादा के दिलतख्त पर बैठ जाओ तो किसी चीज़ का फ़िकर नहीं होगा। जो खिलावे वो खाना है, जो पहनावे वो पहनना है, अगर उसे हमें बेगरी पार्ट में रखना होगा तो भी हम उसमें राज़ी, अगर हमें राजकुमारों की तरह पालेंगे तो भी राज़ी हैं। बाकी किस चीज़ की चिन्ता! बाबा कहता है सर्विस करो, हम कहते हैं हाँ जी। आप करावनहार हैं, जो भी करायें हम सदा तैयार हैं।

3- हम सबका एक ही मन्त्र है – जी हज़ूर हम हाज़िर हैं। वह हजूर है, जो हुक्म करे। बाकी चिन्ता क्या करूँ! अधिक से अधिक बस यही कहेगा ना सूखा रोटला खाओ तो भी खायेंगे, कहेगा 36 प्रकार का खाना खाओ तो भी खायेंगे। हमारे लिये दोनों बराबर हैं। ऐसे भी कई योगी होते हैं, गुफ़ा में रहते हैं, एक-एक मास पानी पर रहते हैं, कोई टाइम आयेगा तो हम भी पानी पर रह लेंगे।

4- समर्पित वह है जो कदम कदम श्रीमत के फरमान पर चलता है। यही हमारा धर्म है, मर्यादा है, श्रीमत ही आज्ञा है। तो बाबा की आज्ञा में सदैव चलो। मैं कदम-कदम श्रीमत पर चल रहा हूँ - इसका चार्ट नोट करो।

5- श्रीमत कहती है रोज़ मुरली सुनो, सवेरे उठो, ज्ञान-स्नान करो, मर्यादाओं में चलो, पवित्र रहो, ब्राह्मण कुल की लाज़ रखो। दूसरों की सर्विस करो, सभी को बाबा परिचय दो, सेवा करो यह सब श्रीमत है। अब बाबा ने हम सबको यही अन्तिम श्रीमत दी है कि बच्चे तुम्हारे जो पुराने संस्कार हैं, उन्हें खत्म करने के लिए याद की यात्रा में रहो। एकाग्रता का अभ्यास करो, अशरीरी बनो। यह अभ्यास कमी-कमजोरियों को खत्म करेगा।

6- हम समर्पित बच्चों के मुख से सदैव रत्न निकलने चाहिए, कभी कुवचन नहीं निकले। क्रोधमुक्त होकर रहो। दृष्टि वृत्ति सदा पावन रहे तो हर चलन से, बोल से बापदादा का नाम बाला कर सकेंगे।

7- समर्पित माना एक बाबा ही मेरा संसार है। बाकी न कोई मेरा, न कोई मेरी...। मेरे दिल में भी तू है, नयनों में भी तू है, सिर पर भी तू है.. बांहों में भी तू है.. तेरे सिवाए मेरा कोई नहीं। तुम्हीं से सुनूं, तुम्हीं से बोलूं, तुम्हीं से हर संबंध निभाऊं...। ऐसा नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप रहने वाला ही अन्त समय के सेकण्ड के पेपर में पास विद ऑनर बन सकेगा।